संवाद से सीखना

– मनोज कुमार

मध्यांतर में कुछ बच्चे फुटबॉल और कुछ बाली बॉल खेल रहे थे। बच्चों के साथ कुछ देर मैंने भी बाली बॉल का लुत्फ़ उठाया। मध्यांतर समाप्त होने के बाद बच्चे अपनी अपनी कक्षाओं में जाकर बैठ गए। अध्यापकों से बच्चों के साथ बातचीत करने का अनुरोध किया गया। अध्यापकों द्वारा सभी बच्चों को एक ही कक्ष में बैठा दिया गया। फिर विज्ञान विषय के शिक्षक दिनेश चौहान जी को भी अनुरोध करके बच्चों की बातचीत में शामिल किया गया।

मैं – आज बच्चे कुछ कम दिखाई दे रहे हैं।

बच्चे – सर, एक बच्चा नहीं आया, बाकी सभी हैं

मैं – वह बच्चा क्यों नहीं आया?

बच्चे – उसको पीलिया हो रखा है।

मैं – पीलिया? यह क्या होता है?

बच्चे – सर, एक बीमारी होती है।

मैं – क्या आपने उस बच्चे को देखा है जिसको पीलिया हो रखा है

बच्चे – हां जी।

बच्चे अपने आप उस के लक्षण जैसे– उसका रंग पीला हो गया है, उसको भूख भी नहीं लगती है, खेलता भी नहीं है बहुत कमजोर हो गया है, बताने लगे। बच्चों से पूछा गया कि बताओ उसको यह बीमारी क्यों हुई? बच्चों ने कुछ देर सोचने के बाद कहा– सर उसने ज्यादा हल्दी खा ली होगी, ज्यादा मसाले व मिर्च खा लिए होंगे, हवा लग गयी होगी, एक बच्चे ने कहा गंदे हाथों से खाना खा लिया होगा। इतनी देर तक दिनेश चौहान जी ने कुछ भी प्रतिक्रया नहीं दी। जब बच्चों से पूछा गया कि, अभी वह बच्चा कितने दिन और स्कूल नहीं आयेगा तो बच्चों का जवाब था कि जब तक वह ठीक नहीं होगा। फिर बच्चों से पूछा गया कि वह ठीक कैसे होगा।

संवाद बच्चों के बीच अपनी बात पहुंचाने और उनके मन की बात समझने का सशक्त जरिया है। उनको साथ लेकर घूमना, उनके परिवेश की बातें जानना और उनके तर्कों को जानना जरूरी है।

बच्चों के जवाब इस प्रकार थे –

मन्त्र लगाकर, मूली खाकर, लस्सी पीकर, जब वह हल्दी और मिर्च खाना कम कर लेगा। दो बच्चों का जवाब था कि डॉक्टर की दवाई खाकर।

जब बच्चों से पूछा गया कि, 'मन्त्र लगाना' क्या होता है तो काफी बच्चे कहने लगे, सर गांव में कोई आदमी है जो मन्त्र बोलता है। उसके पास तीन–चार दिन लगातार जाना पड़ता है और मरीज ठीक हो जाता है।

जब बच्चों से पूछा गया कि डॉक्टर क्या करता है, तो उन्हीं दो बच्चों का जवाब था कि डॉक्टर दवाई देता है और उसी से ठीक होते हैं।

बच्चों से पूछा गया कि कितने बच्चे मानते हैं कि पीलिया मन्त्र से ठीक होता है? सिर्फ दो बच्चों को छोड़कर सभी बच्चों ने अपने हाथ उठाये।

दोनों बच्चों से पूछा गया कि आप क्यों नहीं मानते कि पीलिया मन्त्र से ठीक होता है तो उन बच्चों का जवाब था कि डॉक्टर तो खाने के लिए दवाई देता है। दवाई कुछ दिन खानी पड़ती है उसी से ठीक होते हैं

फोटोः मनोज कुमार

लेकिन मन्त्र वाला क्या देता है? कुछ नहीं। बाकी बच्चों के तर्क थे कि मन्त्र भी तो ठीक कर देता है। एक बच्चे ने कहा कि उसकी दादी मन्त्र से ही ठीक हुई है। इस बात पर उन दो बच्चों से पूछा गया कि इनकी दादी मन्त्र से कैसे ठीक हो गयी? तो दोनों बच्चे कुछ देर चुप हो गए। तुरंत एक बच्चे ने कहा कि हो सकता उनको पीलिया न हुआ हो। इस प्रकार सभी बच्चों में आपस में खूब चर्चा हुई एक–दूसरे की बातों को अपने तर्कों से काटने लगे। इस बीच जब अध्यापक चौहान जी से पूछा गया कि आप किस बात को समर्थन करते हैं, मन्त्र या डॉक्टर? तो उनका जवाब था कि थोड़ा–थोड़ा दोनों पर। उन दो बच्चों से पूछा गया कि आपको क्यों लगता है कि मन्त्र वाला पीलिया को ठीक नहीं कर सकता? इस बात पर डॉक्टर का समर्थन करने वाले एक बच्चे ने मन्त्र का समर्थन करने वाले बच्चों से झल्ला कर कहा कि, क्या मन्त्र वाला टूटी हुई टांग या पेटदर्द ठीक कर सकता है? इस पर मन्त्र वाले बच्चे बिलकुल चुप हो गए। चौहान जी कहने लगे कुछ लोग मन्त्र से ठीक भी होते हैं इसलिए इस बात को नकारा नहीं जा सकता। जब आगे पूछा गया कि डॉक्टर दवाई के साथ–साथ और क्या सलाह देता है, तो काफी बच्चे कहने लगे कि डॉक्टर कहता है पानी उबालकर पीना चाहिए, खाना हाथ धोकर खाना चाहिए, बाजार का नहीं खाना चाहिए, घी, तेल, नमक, मिर्च कम खाना चाहिए आदि। डॉक्टर ऐसा करने के लिए क्यों कहता है? इस पर बच्चों का जवाब था कि पानी में कीटाणु होते हैं, पानी उबालकर वे मर जाते हैं। जब बच्चों से कीटाणुओं के बारे में पूछा गया कि ये दिखते तो नहीं हैं तो तुरंत बच्चों का जवाब था कि दिखते नहीं हैं, उनको देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता होती है। बच्चे इस बात को भी जानते थे कि गंदे पानी से भी बीमारी हो जाती है। जब आगे बच्चों से पूछा गया कि क्या मन्त्र वाला भी कुछ सलाह देता है तो बच्चों ने कहा कि बाहर जाने के लिए मना करता है। क्या मन्त्र वाला पानी के कीटाणुओं को मार सकता है या पानी को मन्त्र से साफ़ कर सकता है? इस प्रश्न पर कुछ बच्चे कहने लगे 'नहीं' लेकिन कुछ बच्चे चुप दिखे।

दोनों बच्चे कहने लगे कि मन्त्रवाला पानी उबालकर पीने के लिए नहीं कहता है। उबालकर पीने वाली बात पर मन्त्र का समर्थन करने वाले बच्चों के भी दो मत सामने आये। इस पर चौहान जी का कहना था कि, चाहे मन्त्र हो या डॉक्टर पानी तो बरसात में उबालकर ही पीना चाहिए। क्योंकि बरसात में बहुत सारी गन्दगी पानी में मिल जाती है और इस प्रकार की बीमारी बरसात में अधिक होती है।

काफी बातचीत के बाद बच्चों को बताया गया कि पीलिया गंदे पानी, बाजार के खुले खाने, गंदे फल, बिना साफ़ की हुई सब्जियों, जिनमें कि कीटाणु हो सकते हैं, खाने से होता है। इसीलिए डॉक्टर सलाह देता है कि पानी उबालकर पीना चाहिए। यही वजह है कि प्रत्येक विद्यालय में सफाई के लिए शौचालय बनाए गए हैं। जब इस प्रकार का पानी या दूषित वस्तु हम उपयोग करते हैं

घमंडी तितली

एक जंगल में एक सुन्दर तितली रहती थी जिसके पंख बहुत सुन्दर और रंग-बिरंगे थे। तितली को अपनी सुन्दरता पर बहुत घमंड था। एक दिन वह एक हाथी के बच्चे के कान पर जाकर बैठ गई हाथी ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तितली ने घमंड से कहा मैं एक सुन्दर सी तितली हूं पर तुम इतने मोटे भद्दे क्यों हो? हाथी ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। कुछ समय बाद वहां पर हवा चली जिस कारण तितली बहुत दूर जाकर गिरी और हाथी टस से मस ना हुआ। तितली को इस घटना से सबक मिला और वह बहुत शर्मिन्दा हुई उसने हाथी से अपनी गलती की माफी मांगी।

– आलीशा

कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कमालपुरकला, हरिद्वार

प्रवाहः आगामी अंक हेतु

साथियों,
आप सभी ने 'प्रवाह' पत्रिका को बहुत अपनेपन से अपनाया है। आपके सुझावों के चलते हमने अब प्रवाह को विषयों पर आधारित अंक से इतर बनाने की योजना बनायी है। अब से हर 'प्रवाह' में शामिल होंगे सभी विषयों के लेख और कुछ कॉलम जैसे पुस्तक समीक्षाएं, स्कूली अनुभव, साक्षात्कार, परिचर्चा, सीखने सिखाने से सम्बन्धित गतिविधियां आदि। 'प्रवाह' हेतु अपने लेख, अनुभव, डायरी, और सुझाव जरूर भेजें। 'प्रवाह' हेतु अपने लेख व फीडबैक भेजने का पता है–

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
आनंद टावर, द्वितीय तल, 2, सहस्रधारा रोड,
सहस्त्रधारा क्रासिंग, देहरादून, उत्तराखण्ड

ई-मेल : pravah@azimpremjifoundation.org

तो पीलिया ही नहीं बल्कि कई अन्य बीमारियां भी हो सकती हैं। जब बच्चों से पूछा गया कि अन्य कौन सी बीमारियां बरसात के समय या गंदा खाना खाने से हो सकती हैं तो जवाब मिला कि उल्टी, पेचिश, पेट दर्द। तेल कम खाने के लिए इसलिए कहा जाता है कि पीलिया के कीटाणुओं से लीवर पर प्रभाव पड़ता है और धीरे–धीरे भोजन पचना बंद हो जाता है। इसी समय चौहान जी ब्लैकबोर्ड पर लीवर का चित्र बनाकर समझाने लगे। फिर मैंने बच्चों से पूछा कि डॉक्टर को लीवर के बारे में सब पता होता है? क्या मन्त्र वाले को भी पता होता है? इस पर किसी भी बच्चे का कोई जवाब नहीं आया। चौहान जी भी इस बात पर सिर्फ हंसने लगे। बच्चों से कहा गया कि मन्त्रवाले से या अपने घर के लोगों से पूछना कि टूटी हुयी टांग या बुखार मन्त्र से ठीक हो सकते हैं? इस पर बच्चे कहने लगे कि टूटी टांग मन्त्र वाला नहीं जोड़ सकता। तीन अन्य अध्यापक जो इतनी देर धूप में बाहर बैठे थे उनसे भी चर्चा की गयी। दो अध्यापकों का कहना था कि मन्त्रों में बहुत शक्ति होती है। उन्होंने उदाहरण देकर कहा कि, अगर मैं अपने छोटे भाई की घरवाली को, जिसको सांप ने काट लिया था, त्यूनी समय पर मन्त्र वाले के पास ले जाता तो उसकी जान बच जाती। उसने तो कई लोगों की जान बचाई है। एक अन्य अध्यापक जो कि गणित शिक्षण करते हैं उनका कोई मत नहीं था।

लगभग दो घंटे की बातचीत बच्चों और शिक्षकों के साथ हुई। सिर्फ दो बच्चों को छोड़कर सभी अध्यापक और बच्चे इस बात पर पूरी तरह से स्थिर थे कि कारण चाहे जो भी हों, मन्त्र ही से यह सब ठीक हो सकता है। हां, ऐसा महसूस हुआ कि बच्चे कुछ बातों पर, जैसे मन्त्रवाला पानी के कीटाणु क्यों नहीं मार सकता, टूटी टांग या अन्य बीमारियां मन्त्र से ठीक क्यों नहीं हो सकती जरूर सोच रहे हैं। लेकिन दो अध्यापकों की दोनों विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं, कोई स्पष्ट राय नहीं है। बच्चों की छुट्टी का भी समय हो चुका था। लेकिन मैं बहुत सारे प्रश्न लेकर घर लौटा। यह सोचते हुए कि सिर्फ दो घंटे की बातचीत से कुछ नहीं होने वाला। साथ ही एक जरूरत भी महसूस हुई कि कम से कम विज्ञान वाले अध्यापकों के साथ लगातार काम और दृष्टिकोण पर बातचीत करनी पड़ेगी, नहीं तो सभी कुछ केवल प्रतीकात्मक रूप में ही होता रहेगा। पूरे समाज में यह सब बात कैसे मजबूत धारणा बन जाती है इसका यह एक उदाहरण है।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन उत्तरकाशी से जुड़े हैं)